रसूल-ए-इन्सानियत

दुनिया के हर इन्सान को गर्व करना चाहिए कि हम इन्सानों मे से एक ऐसा इन्सान पैदा हुआ जिससे इन्सानियत का सर ऊंचा और नाम रोशन हुआ। अगर आप स०अ० न आते तो दुनिया का नक़्शा क्या होता?और हम इन्सानियत की शराफ़त और महानता के लिये किसको पेश करते?मुहम्मद रसूलल्लाह स०अ० हर इन्सान के हैं, मुहम्मद रसूलल्लाह स०अ० इस दुनिया की रौनक़ और इन्सानों की महानता हैं, वो किसी क़ौम की जागीर नही, उन पर किसी देश का ज़ोर नही वो पूरी मानवता के लिये गर्व हैं, क्यों आज किसी देश का इन्सान गर्व व खुशी के साथ ये नही कहता कि मेरा इस इन्सान से संबंध है जिसमे मुहम्मद स०अ० जैसे सम्पूर्ण मानव पैदा हुए।

आज मानव का कौन सा वर्ग है जिस पर आप स०अ० का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष एहसान नही?!

क्या सारी इन्सानी बिरादरी पर आप स०अ० का एहसान नही कि रातों को उठ–उठ कर आप स०अ० गवाही देते थे कि खुदाया! तेरे सब बन्दे भाई–भाई हैं।

क्या सारी दुनिया पर आप स०अ० का एहसान नही कि सबसे पहले दुनिया ने आप स०अ० ही कि ज़बान से सुना कि खुदा किसी देश, क़ौम, नस्ल व बिरादरी का नही, सारे जहानों और दुनिया के सब इन्सानों का है। जिस दुनिया मे आर्यों का खुदा, यहूदियों का खुदा, मिस्रियों का खुदा, ईरानियों का खुदा, कहा जाता था वहां (अल्हम्दुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन्) की हक़ीक़त का ऐलान हुआ और उसको नमाज़ का हिस्सा बना दिया गया।

हमारी आपकी दुनिया मे हकीम व फ़लसफ़ी भी आये, साहित्यकार व शायर भी, विजयी भी, राजनीतिज्ञ व क़ौमी मार्गदर्शक भी, वैज्ञानिक भी आये, मगर किस के आने से दुनिया मे वो बहार आयी जो पैग़मबरों के आने से, फिर सबसे आख़िर, सबसे बड़े पैग़मबर मुहम्मद स०अ० के आने से आयी?! कौन अपने साथ वो हरियाली वो बरकतें, वो रहमतें, मानवता के लिये वो दौलतें वो नेमतें लेकर आया जो मुहम्मद स०अ० लेकर आये।

हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली नदवी रह०
(कारवान–ए–मदीना : पृष्ठ सं०: ७६–७७)